अव्यक्त मुरली 17-12-2017 (रिवाईज 11.04.83)

A) सहज पुरुषार्थी के लक्षण

1. हिमालय पर्वत जितनी समस्या को भी उड़ती कला के आधार पर सेकण्ड में पार करेंगे।

2. सबको पार कर सर्व और सहज प्राप्ति सम्पन्न होंगे।

3. सदा वर्तमान और भविष्य प्रालब्ध पाने के अनुभवी होंगे।

4. प्रालब्ध ऐसे स्पष्ट दिखाई देगी जैसे स्थूल नेत्रों द्वारा स्थूल वस्तु स्पष्ट दिखाई देती है।

5. हर कदम में पदमों से भी ज्यादा कमाई करने का अनुभव करेंगे।

6. सर्व खजानों से भरपूर, गुणों से, शक्तियों से, ज्ञान के सर्व पॉइंट्स से, खुशी से, नशे से कभी खाली नहीं होंगे।

7. कभी मोच नहीं खायेंगे, और ही औरों के लिये स्वयं गाइड पण्डा बन सहज रास्ता पार करायेंगे।

8. सिर्फ लव में नहीं, लेकिन लव में लीन रहेंगे।

9. चारों ओर के वायब्रेशन्स, वायुमंडल से दूर रहेंगे।

10. अलबेलापन नहीं होंगा।

11. हर समय में बाप के साथ का अनुभव करेंगे।

12. सदा सहजयोगी जीवन का अनुभव होंगा।

13. सदा अटेंशन रखेंगे।

14. टेढ़े रास्ते को सीधा बनायेंगे।

15. बाप समान शक्तिशाली, सर्व बातों से सेफ होंगे।

16. सदा मालामाल होंगे।

B) प्रश्न-उत्तर

1. माताओं का ही कौन सा चित्र और चरित्र दिखाया है?

उत्तर:- भगवान को भी बांधने का।

2. किस वृक्ष से बांधा है?

उत्तर:- इस बेहद के कल्प वृक्ष के अंदर स्नेह और भावना की रस्सी से कल्प पहले भी बाँधा था और अब भी रिपीट हो रहा है।

3. बापदादा ऐसे बच्चों को स्नेह के रिस्पांड में क्या देते है?

उत्तर:- बापदादा ऐसे बच्चों को स्नेह के रेसपान्ड में, जिस रस्सी से बाप को बांधते हो, इन स्नेह और भावना की दोनों रस्सियों को दिलतख्त का आसन दे झूला बनाए बच्चों को दे देते हैं।

4. झूले की विशेषता क्या है?

उत्तर:- झूला झुलाता भी है, ऊंचा उड़ाता भी है और अगर जरा भी नीचे ऊपर हुए तो ऊपर से नीचे गिराता भी है।

5. माताओं को कौन सा अनुभव होता है?

उत्तर:- माताओं को झूलने और झुलाने का अनुभव होता है।

6. संगमयुग कौन सा समय है और कौन सा समय नहीं है?

उत्तर:- संगमयुग प्राप्ति का समय है, न कि पुकार का समय है।

7. गिरने का साधन क्या है?

उत्तर:- खाली होना गिरने का साधन है। खड्डा बन जाता है ना। तो खड्डे में गिर जाते हैं।

8. शक्ति अवतार किसलिए हो?

उत्तर:- टेढ़े को सीधा करने के लिए।

9. कान्ट्रैक्ट क्या लिया है?

उत्तर:- स्वर्ग बनाने का। टेढ़े को सीधा बनाने का कान्ट्रैक्ट।

10. अचानक गिरना, यह भी क्या है?

उत्तर:- अचानक गिरना, यह भी अटेन्शन की कमी है।

11. साकार रूप में कोई गिरते थे तो क्या करते थे? क्यों?

उत्तर:- उसकी टोली बन्द होती थी। आगे के लिए सदा अटेन्शन रखने के लिए।

12. अलबेले पुरुषार्थी की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

उत्तर:- अलबेले पुरूषार्थी की सबसे बड़ी विशेषता अन्दर मन खाता रहेगा और बाहर से गाता रहेगा।

13. अलबेला पुरुषार्थी कौन से गीत गाता रहेगा?

उत्तर:- अलबेला पुरुषार्थी अपनी महिमा के गीत गाता रहेगा।

14. स्वयं को सहज पुरुषार्थी कैसे बना सकते हो?

उत्तर:- अब बाकी थोड़ा सा समय रहा हुआ है। इसमें भी समय के वरदान, बाप के वरदान को प्राप्त कर स्वयं को सहज पुरूषार्थी बना सकते हो।

15. ब्राह्मण की परिभाषा क्या है?

उत्तर:- ब्राह्मण की परिभाषा है ही मुश्किल को सहज बनाने वाला। ब्राह्मण का धर्म, कर्म सब यही है।

16. वरदान धारण कब कर सकेंगे?

उत्तर:- परिवर्तन का पात्र अर्थात् दृढ़ संकल्प के पात्र को धारण करके जाना तब वरदान धारण कर सकेंगे।

17. मिलना अर्थात क्या?

उत्तर:- मिलना अर्थात् मुखड़ा देखना और दिखलाना।

18. क्या समझ लेते तो यह भी भूल हो जायेगी?

उत्तर:- दीदी दादी भी बाप समान हैं ना! जब भी दीदी दादी से टोली लेते हो तो क्या समझकर लेते हो? बापदादा टोली दे रहे हैं। अगर दीदी दादी समझ लेते तो यह भी भूल हो जायेगी। (निम्मित आत्माओं को साधारण समज लेंगे तो यह भी भूल हो जायेगी।)

19. शुक्र क्या करो?

उत्तर:- मन की शान्ति, तन, धन सब गँवा दिया, बाकी क्या रहा! फिर भी शुक्र करो 1 परसेन्ट भी बचा हुआ तन-मन-धन ईश्वरीय कार्य में लगाने से 21 जन्म 2500 वर्ष के लिए जमा हो जाता है।

20. शुभ संकल्प पूरा होने का साधन क्या है?

उत्तर:- शुभ संकल्प पूरे होने का साधन है एकरस अवस्था। शुभ चिन्तन, शुभचिंतक - इसी से सब बातें सम्पन्न हो जायेगी।

21. शक्तिशाली श्रेष्ठ आत्माओं का कर्तव्य क्या है?

उत्तर:- चारों ओर के वातावरण को शक्तिशाली बनाना यही है शक्तिशाली श्रेष्ठ आत्माओं का कर्तव्य।

C) चिंतन के लिये टॉपिक्स

1. संगमयुगी कल्प वृक्ष के वैरायटी झूले

2. सहज पुरुषार्थी के लक्षण

3. सहज योगी के लक्षण

4. भक्ति के संस्कारों का विदाई समारोह

5. सर्वोच्च मंजिल- टेढ़े रास्तें वा टेढ़े राही?

6. आध्यात्म पथ के अनजान खड्डे

7. स्वर्ग निर्माण का संगमयुगी कॉन्ट्रेक्ट

8. लवलीन अवस्था और समानता ही माया प्रूफ सेफ

9. अंदर से मन खाता, बाहर से गीत गाता अलबेला राही

10. मास्टर सर्वशक्तिमान के बोल

11. आदर्श ब्राह्मण की परिभाषा

12. जगत के पालनहार के सहयोगी बच्चे

13. शुभ संकल्पों की सफलता का साधन- एकरस अवस्था

14. शक्तिशाली श्रेष्ठ आत्माओं का कर्तव्य

15. वरदानों की धारणा के लिये परिवर्तन का पात्र

16. चैतन्य में कल्प पहले वाले चित्र की अनोखी झांखी

D) स्वमान

1. मैं सदा संगमयुगी झूलों में झूलने वाली आत्मा हूँ।

2. मैं आत्मा अनुभवीमूर्त हूँ।

3. मैं आत्मा उड़ती कला में जाने वाली हूँ।

4. मैं आत्मा सहज पुरुषार्थी हूँ।

5. मैं आत्मा सहज योगी हूँ।

6. मैं अधिकारी आत्मा हूँ।

7. मैं आत्मा शक्ति अवतार हूँ।

8. मैं आत्मा स्नेह और भावना की रस्सी में बापदादा को भी बांधने वाली हूँ।

9. मैं शिवशक्ति हूँ।

10. मैं बाप के और समय के वरदानों को धारण करने वाली पात्र आत्मा हूँ।

11.मैं आत्मा चीयरफुल चहेरे वाली हूँ।

12. मैं जन्म से ही बापदादा की सहयोगी आत्मा हूँ।

13. मैं चैतन्य में कल्प पहले वाला चित्र देखने वाली आत्मा हूँ।

14. मैं बाप को संकल्प देकर निरसंकल्प बनने वाली आत्मा हूँ।

15. मैं सदा स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति में बिजी आत्मा हूँ।

16. मैं सदा एकरस अवस्था वाली शुभ चिंतक आत्मा हूँ।